तृतीय अध्याय

नागार्जुन के खंडकाव्यों में नारीचित्रण

तृतीय अध्याय
नागार्जुन के खंडकाव्यों में नारीचित्रण

प्रस्तावना

अ). भारतीय समाज में नारी का स्थान

आ) हिंदी साहित्य में नारी का स्थान

इ) नागार्जुन के खंडकाव्यों में वर्णित स्त्री-पात्र

ई) नागार्जुन के खंडकाव्यों में नारी के विविध रूप

1. माता के रूप में नारी
2. पत्नी के रूप में नारी
3. प्रेयसी के रूप में नारी
4. भाभी के रूप में नारी
5. सखी के रूप में नारी

उ) विविध रूपों में नारी

1. उपेक्षिता
2. शोषित नारी
3. सहनशील नारी
4. स्वाभिमानी नारी
5. त्याग/समर्पण की मूर्ति : नारी
6. प्रेरणा की स्रोत : नारी
7. धोखे का शिकार नारी
8. विद्रोही नारी
9. पतिव्रता नारी
10. क्रूर/दुष्ट स्वभाव की नारी
11. घृणित नारी
12. अंधविश्वासी/रूढ़िग्रस्त नारी

ऊ) कुल निष्कर्ष

* * *

प्रस्तावना :-

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। पुरुष का जीवन नारी के बिना अधूरा है। मानव जीवन में नर-नारी का अन्योन्याश्रित संबंध है। सभ्यता और संस्कृति का भवन नर-नारी संबंध पर आधारित है। नारी अपनी विविध भूमिकाओं द्वारा पुरुष का जीवन सुंदर बनाती है। माता के रूप में वह सेवा और त्याग का प्रतीक है, तो पत्नी तथा प्रेयसी के रूप में प्रेरणा है।

सृष्टि के विकासक्रम में नर के समान नारी का भी महत्व रहा है। याज्ञवल्क्य मुनि का कथन है, "जिस तरह चने अथवा सीप का आधा दल दूसरे से मिलकर पूर्ण होता है, उसी प्रकार पुरुष के सामने का खाली आकाश नारी के साथ मिलने से पूर्ण होता है।"[1]

भावना तथा मानसिक क्षमता के स्तर पर नारी पुरुष के समकक्ष है। परंतु शारीरिक भिन्नता को ही महत्व देकर उसे दुर्बल तथा निम्न स्तर की साबित करने का प्रयास होता रहा है। फिर भी भारतवासियों के सभी आदर्श स्त्री रूप में पाए जाते हैं। "विद्या का आदर्श सरस्वती में, धन की लक्ष्मी में, पराक्रम का महामाया में अथवा दुर्गा में, सौंदर्य का रति में, पवित्रता का गंगा में। यहाँ तक की भारतवासियों ने सर्वशक्तिमान भगवान को भी जगत् जननी के रूप में देखा है।"[2]

जिस घर में नारी का आदर होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। जहाँ उसका आदर नहीं होता, उस घर में कभी शांति नहीं होती।

भारतीय समाज में नारी का स्थान :-

मनुष्य सामाजिक प्राणी है और समाज का एक अंग है। परिवार का केंद्रबिंदू है नारी। विदेशियों को भारतीय संस्कृति के जिन विशेषताओं ने आकृष्ट किया है, उनमें प्रमुख है नारी-गौरव। एण्डूज ने कहा है - "भारतवर्ष की महानता का सच्चा रहस्य तो हमें कुटुंब के अंदर ही मिलता है।... एक ओर पुरुष मातृशक्ति के रूप में स्त्री की पूजा करता है, दूसरी ओर स्त्री का आदर्श वह अनुपम पातिव्रत-धर्म है, जो दोनों भारतीय स्त्री-पुरुषों को एक कोमलतम अदृष्ट स्नेहसूत्र में बाँध देते हैं।"[3]

सामाजिक विकास का मूल स्रोत नारी है। उसी के कारण गृहसंस्था का निर्माण हुआ और समाज का विकासक्रम चलता रहा।

वैदिक काल में नारी के लिए जिन शब्दों का प्रयोग हुआ है, उससे तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति स्पष्ट होती है।

1. निरुक्त में कहा है, "मानयन्ति एनाः पुरुषाः।" पुरुष उसका सम्मान करते हैं। अतः उसे 'मेना' कहा गया है।
2. नारी नर की सहयोगिनी है। अतः उसे 'योषा' कहते हैं।
3. वह सौंदर्य को बुनती या बिखेरती है - वयति सौन्दर्यम्। अतः उसे 'वामा' कहा है।
4. नारी पुरुष के मन को आह्लादित करती है, अतः वह 'प्रमदा' है।

5. वह काम्या होने से 'कामिनी', रम्या होने से 'रमणी', संतति उत्पन्न करने के कारण 'जननी', 'जाया' और तेजस्विनी होने के कारण 'भामा' कहलाती है।
6. माता, पत्नी, भगिनी, पुत्री आदि सभी रूपों में पूजनीय होने से उसे 'महिला' कहा गया है।
7. पति द्वारा उसका भरण-पोषण होता है, अतः वह 'भार्या' कहलाती है।[4]

इससे स्पष्ट है प्राचीन भारत में मन को आह्लादित करने वाली, अपने विविध रूपों में पूजनीय नारी को गौरव प्राप्त था।

जिस देश में स्त्रियाँ कष्ट पाती थीं, वहाँ का शासन सफल नहीं माना जाता था। छांदोग्य उपनिषद में केकेय नरेश अश्वमति ने कहा है, "मेरे राज्य में कौई स्वैरिणी स्त्री नहीं है। नारी जाति में स्वैरिता न फैले इस दृष्टि से राज्य का कर्तव्य पुरुषों को कामाचार से बचाना था। शासन में स्त्रियों को 'अवध्य' माना गया था। जिन अपराधों के लिए पुरुषों को कड़े दंड दिए जाते थे, स्त्रियाँ उनके लिए साधारण दंड पाकर छुटकारा पा जाती थीं।"[5]

स्त्रियों के विषय में जो कुछ पक्षपातपूर्ण सूत्र पाए जाते हैं, उनके कारण व्यावहारिक थे। स्त्रियों की शारीरिक बनावट, विशिष्ट परिस्थिति की निःसहायावस्था आदि को ध्यान में रखकर ये सूत्र बनाए गए थे।

शास्त्रकारों ने प्रकृति को पुरुष से अलग कभी नहीं माना। अर्ध-नारीश्वर की कल्पना से आज भी पत्नी को अर्धांगिनी कहा जाता है। आज भी सीताराम, राधेश्याम, उमाशंकर आदि नामों से उस आदिशक्ति की पुनरावृत्ति की जाती है। इसप्रकार वैदिक काल में नारी का भारतीय समाज में गौरवपूर्ण स्थान रहा है।

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक आते-आते नारी की स्थिति में काफी बदलाव आया। परंपरागत बंधन धीरे-धीरे टूटने लगे और शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण समाज में जागृति होने लगी। नारी अपने अस्तित्व के प्रति सजग होती दिखाई देने लगी। चारदीवारों के अंदर का उसका सीमित कार्यक्षेत्र विस्तृत होने लगा। महात्मा फुले, महर्षि कर्वे, राजा राममोहन राय आदि समाज सुधारकों ने नारी सुधार का नया रास्ता दिखलाया। इससे नारी के व्यक्तित्व में काफी बदलाव आया और वह विकास की ओर अग्रसर हुई। आज आधुनिक युग में कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जिसमें नारी का सहयोग ना हो।

हिंदी साहित्य में नारी का स्थान :-

नारीसमाज मनुष्य के साथ-साथ साहित्य की भी प्रेरक रही है। जिसप्रकार नारी बिना पुरुष तथा समाज अधूरा है, उसी प्रकार साहित्य भी नारी के बिना अपूर्ण-सा प्रतीत होता है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक नारी को लेकर विभिन्न विधाओं में रचनाओं का निर्माण हुआ। साथ ही विभिन्न कालों में उसकी तरफ देखने का दृष्टिकोण भी अलग-अलग रहा है।

'आदिकाल' में हिंदी साहित्य के रासो काव्य में उसे भोग्या माना गया। उसके वीरांगना रूप की अपेक्षा कामिनी रूप का ही अधिक जिक्र हुआ। धर्म के क्षेत्र में नाथों, सिद्धों तथा जैनों ने उसे

मोक्षमार्ग कहकर उसके प्रति घृणा प्रकट की। परंतु उसके सतीरूप को भी आदर्श माना। भक्त कवियों ने लौकिक रूप में उसे त्याज्य ठहराया। परंतु आध्यात्मिक क्षेत्र में पातिव्रत्य को सर्वोपरि माना। रीतिकाल में कवियों ने नारीसौंदर्य की बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा की रीतिकालीन कवियों ने नारी के नख-शिख वर्णन में अपनी प्रतिभा का चमत्कार दिखाया।

आधुनिक काल तक आते-आते शिक्षाप्रसार के कारण स्त्री जाति में काफी बदलाव आया। छायावादी कवियों ने उसे देवी, सहचरी, माँ के रूप में सम्मान दिया। छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा ने कहा है, "पुरुष प्रतिशोधमय शोध है। स्त्री क्षमा, पुरुष शुष्क कर्तव्य है। स्त्री सरस सहानुभूति। पुरुष ब्रह्म है तो स्त्री उदय की प्रेरणा है।"[6] मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित प्रगतिवादी कवियों ने नारी को देवी तथा भोग्या रूप से मुक्ति दिलाकर उसके मानवी रूप का उद्‌घाटन किया। प्रगतिवादी कवि नागार्जुन का पौराणिक पात्र सीता को जनसाधारण की प्रतिनिधि के रूप में घोषित करना इस बात को पुष्टि देता है। प्रयोगवादी कवियों ने नारी-पुरुष संबंधों की नई व्याख्या की। साठोत्तरी कविता में नौकरी करने वाली स्त्री के शोषण तथा उसके प्रति वासनात्मक दृष्टिकोण का विरोध किया गया। साथ-साथ बेटीविषयक कविताओं में पुरुष हृदय के वात्सल्य को अभिव्यक्ति मिली। महाकवि निराला की 'सरोज-स्मृति' इसका एक उदाहरण है।

इस तरह हिंदी साहित्य में विभिन्न कालों में, विभिन्न रूपों में नारी का वर्णन हुआ है।

नागार्जुन के खंडकाव्यों में वर्णित स्त्री-पात्र :-

नागार्जुन ने अपने खंडकाव्यों में नारी के विविध रूपों का चित्रण किया है। नागार्जुन के खंडकाव्य 'भूमिजा' और 'भस्मांकुर' पौराणिक काव्य होने के कारण उनके स्त्री पात्र पौराणिक हैं। नागार्जुन के खंडकाव्यों में चित्रित नारी पात्र इस प्रकार है -

प्रमुख नारी पात्र :-

1. रति (भस्मांकुर)
2. सीता (भूमिज)
3. अहल्या (भूमिजा)

सहायक नारी पात्र :-

1. पार्वती (भस्मांकुर)
2. ताड़का (भूमिजा)
3. त्रिजटा (भूमिजा)
4. जया (भस्मांकुर)
5. विजया (भस्मांकुर)

गौण नारी पात्र :-

1. शिवानी (भस्मांकुर)
2. मेना (भस्मांकुर)

3. कौशल्या (भूमिजा)
4. सुमित्रा (भूमिजा)
5. धाई (भूमिजा)

नागार्जुन के खंडकाव्यों में नारी के विविध रूप :-

अपने विविध रूपों से नारी पुरुष को प्रेरणा, शक्ति तथा स्नेह देती है। वह समाज में कभी जन्मदात्री माता के रूप में तो कभी प्रेरणामयी अर्धांगिनी के रूप में आती है; तो कभी स्नेह की धारा प्रवाहित करने वाली भगिनी के रूप में लक्षित होती है। अतः समाज में नारी के माता, पत्नी, भगिनी, पुत्री, सखी आदि अनेक रूप दिखाई देते हैं, जो पुरुष के साथ भावात्मक, रागात्मक, शारीरिक आदि से संबंधित होने के कारण निर्माण हुए हैं।

नागार्जुन के खंडकाव्य 'भस्मांकुर' और 'भूमिजा' पौराणिक होने के कारण उनके नारी-पात्र भी पौराणिक है। उनके खंडकाव्यों में नारी के विभिन्न रूप दृष्टिगत होते हैं। माता, पत्नी, प्रेयसी, भाभी, सखी आदि रूपों में नागार्जुन के खंडकाव्यों में नारीचित्रण हुआ है। नारी परिवार का एक घटक होने के कारण विविध संबंधों में नारी के विविध रूप दिखाई देते हैं।

1. माता के रूप में नारी :-

नारी जब माता बन जाती है तो संतति की कल्याण कामना ही उसका प्रमुख उद्दिष्ट बन जाता है। बच्चे के लिए अपने वैयक्तिक सुख-दुखों की वह परवाह नहीं करती। अनेक कष्ट और यातनाएँ झेलकर बच्चों की परवरिश भी करती है। नागार्जुन ने अपने खंडकाव्य में ऐसी ही आदर्श माता का चित्रण किया है।

सीता :-

'भूमिजा' खंडकाव्य की नायिका सीता आदर्श माता के रूप में दिखाई देती है, जिसे जुड़वाँ बच्चे हैं - लव और कुश। पति द्वारा गर्भावस्था में वनवास भेजने पर महाकवि वाल्मीकि के आश्रम में रहकर वह लव और कुश जुड़वाँ बच्चों को जन्म देती है। ये तेजस्वी बालक अपनी माँ की तकलीफों के बारे में सोचकर उदास हो जाते। उनके चाँद-से प्यारे मुखड़े को मानो ग्रहण लग जाता। माता सीता उनकी कुम्हलाई हुई सूरत नहीं देख पाती। बच्चों की सूरत देखकर वह खुद भी नाराज हो जाती है।

महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में बैठी सीता को बीते हुए दिन याद आते हैं। पति द्वारा वनगमन के आदेश के बाद वह किस तरह वाल्मीकि के आश्रम में दोनों बच्चों को जन्म देती है, उनका भरण-पोषण, स्नेह-प्यार आदि बातें उसे याद आती है।

"कैसे कैसे ये जुड़वाँ नवजात
अनुप्रणित रह गए प्रसव के बाद
करुणा-विगलित तापसियों के मध्य

हुआ भरण-पोषण इनका किस भाँति
सारी बातें आती मुझको याद
कहाँ-कहाँ से इन्हें मिला था स्नेह।"[7]

सीता लव-कुश को जन्म ही नहीं देती बल्कि उनपर अच्छे संस्कार भी करती है। महर्षि वाल्मीकि तथा सीता उन्हें विद्या अध्ययन, तीर चलाने का अभ्यास, ब्रह्मचर्य आदि बातों की शिक्षा देते हैं। वह सोचती हैं यदि गुरु विश्वामित्र इन्हें भू-परिक्रमा हेतु ले जाते, फिर से दुष्ट-दलन आरंभ करते। फिर से स्वयंवरों का योग ताजा होता, फिर से सारा इतिहास। फिर से अभिषेक, वनगमन, परंतु वनादेश का हेतु इस बार क्या होता? यह प्रश्न सीता के मातृहृदय को पीड़ा पहुँचाता है। उसका मातृहृदय व्यथित हो उठता है -

"होगा शासक कलंकिनी का पुत्र!
प्रजा करेगी क्या इसको बर्दाश्त?
फिर से होंगे रघुनन्दन उद्विग्न...
फिर से देंगे लक्ष्मण को आदेश -
वनवासी हो कम से कम दस वर्ष..."[8]

इस तरह चरित्र पर लगे झूठे कलंक को साथ लेकर माता सीता अपने दोनों बच्चों की परवरीश करती है। उसे सिर्फ बच्चों के लिए ही जीवित रहना है, नहीं तो वह पति द्वारा लोकापवाद के कारण पुनः वनवास भेजने पर आत्महत्या करके अपना जीवन समाप्त कर सकती थी। पर उसमें स्थित वात्सल्य भाव ही उसे ऐसा न करने पर मजबुर कर देता है। लक्ष्मण जब उन्हें तमसा नदी के किनारे छोड़कर लौटने लगे तो सीता कहती है, "मेरे अंदर यदि तुम्हारा जीव विद्यमान न होता तो मैं वहीं सरयू में डूबकर अपने को समाप्त कर देती। परंतु आज मैं वैसा नहीं कर सकती हूँ क्योंकि रघुकुल के विशाल वटवृक्ष का बीजांकुर मेरे भीतर विद्यमान है। इसके आविर्भाव होन्‍े तक तो मुझे अपने को बचाना ही होगा।"[9] इस तरह सीता के मातृहृदय का परिचय यहाँ हमें मिलता है।

कौशल्या -

कौशल्या उस मातृह्रदय का परिचायक है जिसके पुत्र राम का राज्याभिषेक होते-होते रुक गया और चौदह वर्षों का वनवास उसे दे दिया गया। फिर भी उसके मातृत्व में कोई अंतर नहीं आया। राम की तरह ही वह भरत. लक्ष्मण, शत्रुघ्न को प्यार करती है। रामद्वारा अहल्या उद्धार के बाद अहल्या के कौशल्यासंबंधी ये शब्द कौशल्या की महत्ता बताते हैं -

"कौशल्या है धन्य
अनुपम रत्न प्रसविनी जिनकी कोख।"[10]

'भूमिजा' में कौशल्या का सिर्फ उल्लेख हुआ है, न कि स्वयं उसका चरित्र उजागर हुआ है।

अहल्या :-

अहल्या 'भूमिजा' में मुनि गौतम की पत्नी के रूप में उल्लेखित है। उसका मातृरूप काव्य में उजागर नहीं हुआ है। राजा जनक के पुरोहित शतानंद अहल्या की कोख से उत्पन्न पुत्र थे, इसका मात्र उल्लेख है। भूमिजा में

ताड़का :-

ताड़का 'भूमिजा' की एक राक्षसी माँ है, वह अपने कुकृत्यों में अपने बेटे मारिच और सुबाहू को भी शामिल कर लेती है। मुनि विश्वामित्र के यज्ञ को असफल बनाने हेतु वह अपने दोनों बेटों सहित उपद्रव मचाती रहती है। ताड़का अपने बच्चों पर कुसंस्कार करने वाली माँ है तथा अपने ही पथ पर चलने की शिक्षा देती है। कवि ने उसके बारे में लिखा है -

"बाल, वृद्ध, रोगी अथवा विकलांग
नहीं किसी को वह सकती है छोड़।
गर्भभार से मंथर यद्यपि चाल,
पुलकित यद्यपि नव-शिशु के प्रतिरोम,
फिर भी स्त्रियाँ न पाती उससे त्राण।
ले लेती है सबके ही वह प्राण।" [11]

जो गर्भवती महिलाओं को अपना शिकार बना लेती है, उसमें वात्सल्य भाव विद्यमान होगा भी या नहीं, साशंकता निर्माण होती है।

2. पत्नी के रूप में नारी :-

परिवार में पति-पत्नी का स्थान रथ के दो पहिए की तरह है, तभी तो पत्नी को अर्धांगिनी कहा जाता है। वास्तव में भारतीय पत्नी में स्थित त्याग, कर्तव्यतत्परता, धर्मनिष्ठता तथा एकनिष्ठता आदि गुण ही पति को आकर्षित करते रहे हैं।

नागार्जुन ने अपने खंडकाव्यों में पत्नी को पतिव्रता के रूप में अभिव्यक्ति दी है। पौराणिक खंडकाव्य होने के कारण जाहिर है नारी का आदर्श रूप ही प्रस्तुत हुआ है।

रति :-

'भस्मांकुर' की रति कामदेव की पत्नी है, जो हर वक्त, हर परिस्थिति में अपने पति का साथ देती है। सुरसमाज के हित के लिए इंद्रदेव मदन (कामदेव) को शिव जी की तपस्या भंग करने का काम सौंपते हैं। रति इस कार्य में अपने पति का साथ देती है। एक पल भी वह अपने पति से दूर नहीं रहती। उसने अपने पति को इतना स्नेह दिया है कि पति भी हमेशा उसके पास रहने की कामना करते हैं। -

"रहो यहीं तुम अनुपल मेरे पास
हों महसूस तुम्हारे सुरभित श्वास

कुंचित कुंतलराशि... मिले यदि स्पर्श
रग-रग में भर जाती है नव-स्फूर्ति।"[12]

रति अपने पति की प्रेरणा बनकर हमेशा उनके सहवास में रहती है। रति और मदन दोनों को भलिभाँति पता है कि शिव जी क्रोधी है और उनकी तपस्या भंग करना कोई मामूली काम नहीं है। जब पार्वती शिव जी के सामने आती है तो शिव जी एक क्षण उसकी ओर देखते हैं। इसी अवसर का लाभ उठाते हुए मदन अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की कोशिश करते हैं, मगर साहस नहीं जुटा पाते। उस वक्त रति ही उन्हें प्रेरणा देती है -

"सन्धानो लक्ष्य!
हाँ, हाँ, बढ़िया मौका आया हाथ
मत चूको यह अवसर छोड़ो तीर..."[13]

मदन को प्रेरणा देने वाली रति मात्र अंदर से अपने पति के बारे में चिंतित होती है। उसे पति की चिंता है क्योंकि वह उन्हें बेहद चाहती है। उसके मन में बार-बार अशुभ विचार आते हैं। उसे भय है कि कहीं शिव जी के कोप का भाजन उसका पति न हो।

"रति हट गई वहाँ से काफी दूर
रही देखती लेकिन पति की ओर
थी यद्यपि अब बाहर से आश्वस्त
किंतु ह्रदय था संदेहों से ग्रस्त
बार-बार आते थे अशुभ विचार
फड़क-फड़क उठती थी दाईं आँख।"[14]

शिव जी की तपस्या भंग करने के शिव जी मदन को कोप का भाजन बनाते हैं तथा उसे भस्म कर देते हैं। उस समय एक पतिव्रता स्त्री जो करती है, वहीं करने का विचार रति करती है। पति की चिता में खुद भी भस्म होना चाहती है। जब पति ही न रहा तो पत्नी के जीवित रहने में क्या अर्थ है? रति मदन को इतना चाहती है कि एक पल भी उनसे दूर नहीं रह सकती। वह मूर्च्छित हो जाती है तथा होश में आने के बाद आत्महत्या करना चाहती है।

"मूर्छित ही रह जाती मैं चिरकाल
रह जाती मैं निरवधि संज्ञाशून्य
है असह्य अब क्षण भर भी वैधव्य
क्यों न करू मैं आत्मदाह तत्काल।"[15]

इस तरह रति एक ऐसी पत्नी है, जो हमेशा अपने पति की परछाया बनकर रहती है तथा पति से क्षण भर भी अलग रहने की कल्पना भी नहीं कर सकती।

सीता :-

'भूमिजा' की सीता एक ऐसी पतिव्रता नारी है, जो हर अन्याय सहकर भी पति के प्रति समर्पित है। अग्निपरीक्षा देने के बाद भी केवल लोकापवाद के कारण श्रीराम गर्भावस्था में अपनी पत्नी सीता को पुनः वन भेजते हैं। फिर भी पतिव्रता सीता अपने पति के खिलाफ एक शब्द भी नहीं कहती। पूर्वजन्म के पापों का फल समझकर पति की आज्ञा स्वीकार करती है। वन में छोड़ने के बाद सीता का लक्ष्मण से यह कहना कि, "श्री रामचंद्र के चरणों में मेरा सतसहस्त्र प्रणाम निवेदित करना। इस स्थिति में मैं जो वनवासिनी हुई हूँ वह पूर्वजन्म के पापों का ही फल है। इसमें राजा राम का कोई दोष नहीं।"[16] इस बात का प्रमाण देता है कि सीता पति की आज्ञा का पालन करने वाली पत्नी थी।

सीता के उज्ज्वल चरित्र का मूलाधार उसका अटल पतिव्रत धर्म है। सीता सात्विक संस्कारों से युक्त, चौदह वर्षों तक पति की छाया बनकर वनवास में रहने वाली, अशोकवाटिका में बंदिनी बनकर भी नारी मर्यादा की रक्षा करने वाली, अग्निप्रवेश करके अग्नि को भी अपने स्पर्श से पावन करने वाली एक आदर्श पतिव्रता स्त्री है।

अहल्या :-

'भूमिजा' में अहल्या गौतम मुनि की पत्नी के रूप में सामने आती है। अहल्या पतिव्रता नारी है, जिसने अपने पति को छोड़ और के बारे में कभी सपने में भी नहीं सोचा था। वह पत्नीधर्म सहर्ष निभाती है।

अहल्या अद्‌वितीय सुंदरी होने के कारण देवराज इंद्र छल से उसे पाना चाहते हैं। गौतम ऋषि का वेश धारण कर अहल्या के साथ छल करना चाहते हैं, मगर पतिव्रता अहल्या उनका विरोध करती है। इसी बीच मुनि गौतम आ जाते हैं तथा अहल्या की कटु शब्दों में भर्स्तना करते हैं। पति को तन-मन से समर्पित अहल्या पति का यह आरोप सह नहीं पाती। प्रभु श्रीराम के पावनस्पर्श से अहल्या में चेतना निर्माण होती है और पतिद्‌वारा मिले हुए शाप के बारे में राम को बताती है -

"सत्य-सत्य कहती हूँ, परमोदार !
साक्षी पृथ्वी - साक्षी है आकाश
हुई नहीं सम्पृक्त किसी के साथ
कभी अहल्या अपने पति को छोड़।"[17]

इससे अहल्या का पति के प्रति समर्पन एवं निष्ठा दृष्टिगत होती है। ऋषि पत्नियों की गौरवपूर्ण परंपरा के बीच अहल्या भो एक ऋषि पत्नी है, जौ पूर्ण रूप से अपने पति को समर्पित है। एक आदर्श पत्नी के रूप में उसका उल्लेख किया जा सकता है।

3. प्रेयसी के रूप में नारी :-

नागार्जुन ने 'भस्मांकुर' में प्रेम जैसी अत्यंत वैयक्तिक चीज का बड़ा मर्यादापूर्ण चित्रण किया है। 'भस्मांकुर' पौराणिक खंडकाव्य होने के कारण यहाँ प्रेम का अत्यंत सात्विक रूप झलकता है, वहाँ मांसलता की गंध तक नहीं है।

पार्वती :-

नागार्जुन ने पार्वती को शिव की प्रेयसी के रूप में चित्रित किया है। कवि ने यहाँ उसे देवी के रूप में न दिखाकर मानवी के रूप में अभिव्यक्ति दी है। किशोरी पार्वती अत्यंत सुंदरी है, जो अपनी सखियों के साथ प्रतिदिन प्रौढ़ शंकर की परिचर्या के लिए समाधिस्थल पर जाती है। वह शिव के प्रति सर्वथा अपने को अर्पित पाती है। शायद यह प्रकृति का अनागत चमत्कार है जो रात के अंतिम प्रहर में कई बार कई रूपों में वह खुद को तरुण शंकर के साथ पाती है। अपने स्वप्नों में सखियों से बातें करती हैं। -

"हमने देखे स्वप्न तुम्हारे साथ!
गौरी तरुणी, तरुण-तरुण शिवनाथ..."[18]

यहाँ पार्वती का प्रेयसी रूप अभिव्यक्त हुआ है, जहाँ वह सपने में अपने को प्रियकर के साथ वृषभ पर सवारी करती है -

"रात्रिशेष में देखा अद्भुत स्वप्न
तरुण वृषभ पर दोनों हुए सवार
मुझे मिला है यायावर का प्यार
नापेगा वह क्षितिजों का विस्तार
तरुण वृषभ पर हम दो जने सवार
निकल पड़े हैं जाने पहली बार।"[19]

पार्वती तपस्या में लीन शिव की सेवा तो करती है परंतु सपने में तरुण शिव के साथ खुद को पाती है। यहाँ कवि ने उसे प्रेयसी रूप में अभिव्यक्ति दी है। परंतु उसका प्रेयसी रूप यहाँ सपनों तक ही सीमित है।

4. भाभी के रूप में नारी :-

भारतीय समाज में भाभी को माँ समान माना जाता है। भाभी सहेली के समान भी होती है। मित्र की पत्नी को भी 'भाभी' संबोधित किया जाता है -

रति :-

'भस्मांकुर' में रति वसंत की भाभी के रूप में उपस्थित है। वसंत कामदेव का सखा है और कामदेव की पत्नी का नाम है रति। यहाँ रति वसंत की रिश्ते से भाभी न होकर उसके मित्र की पत्नी के रूप में है। उसने रति से भाभी का रिश्ता जोड़ा है, जो उसके इस कथन से स्पष्ट होता है। वह मदन से कहता है -

"तुम जाओ, बूढ़े का करो इलाज
भाभी को चाहे ले जाओ साथ।"[20]

जब भी पति-पत्नी के बीच कुछ अनबन होती है तो मदन अपने मित्र को रति को समझाने को कहता है। स्वयं रतिपति मदन भी यही रिश्ता मानता है, जो इन काव्यपंक्तियों से ज्ञात होता है -

"समझाओ अपनी भाभी को मित्र
दिल-दिमाग हैं इसके बड़े विचित्र
देती है दुनिया-भर को उपदेश
नहीं भा रहा शिवशंकर का भेस..."[21]

रति भी वसंत के साथ भाभी जैसा ही व्यवहार करती है। कहते हैं बड़ी भाभी माता समान होती है तथा छोटी भाभी बहन समान। रति भी वसंत को बंधु-समान मानती है। शिव जी द्वारा मदन को भस्म करने के पश्चात रति मूर्छित हो जाती है तथा होश में आने पर आत्मदाह करने का विचार करती है। वह वसंत से कहती है -

"हाँ, चिता सजाओ बंधु।
करो बांधवी का अंतिम संस्कार।"[22]

इस तरह रति यहाँ रिश्ते से ना सही परंतु मित्र की पत्नी की हैसियत से भाभी के रूप में अभिव्यक्त हुई है।

सीता :-

'भूमिजा' की सीता एक आदर्श भाभी है। देवर लक्ष्मण सीता को मातासमान मानते हैं। वे अनन्य बंधुभक्त हैं, जो भाई की हर आज्ञा का पालन प्रभु की आज्ञा समझकर करते हैं। लोकापवाद के कारण प्रभु रामचंद्र सीता को वनवास देते हैं और लक्ष्मण को सीता को तमसा नदी के किनारे छोड़ आने की आज्ञा देते हैं। लक्ष्मण कलेजे पर पत्थर रखकर प्राणप्रिय भाभी को तमसा के किनारे छोड़ आते हैं।

'भूमिजा' में प्रत्यक्ष रूप में देवर-भाभी के रिश्ते का चित्रण नहीं मिलता। हाँ, भूमिका में इसका थोड़ा-सा उल्लेख मिलता है।

5. सखी के रूप में नारी :-

मनुष्य के जीवन में साथी तथा सहेली का स्थान अत्यंत करीबी होता है। कोई भी व्यक्ति अपने दिल की बात अपने मित्र तथा सहेली से ही करता है। सखी से बढ़कर प्रिय एवं अंतरंग संबंध नारी के प्रति अन्य और कोई नहीं है। नारी अपनी सखी के सुख-दुख में सहायिका होती है तथा किसी भी काम में मदद करती है।

जया और विजया :-

'भस्मांकुर' में जया और विजया पार्वती की सखियाँ हैं। कैलाश शिखर पर तपस्या में लीन शिव जी की सेवा करने के लिए पार्वती के साथ उसकी दोनों सखियाँ भी होती हैं। वे दोनों पार्वती की छोटे-मोटे कामों में मदद करती रहती है। पार्वती अपने सपनों की चर्चा सखियों से ही करती है। पार्वती के सपनों को लेकर जया और विजया पार्वती से हल्के-फुल्के मजाक भी करती है। साथ ही पार्वती को उसके प्रिय तक पहुँचाने का काम करती है।

"रात्रिशेष में देखा अद्भुत स्वप्न
पहुँचाकर प्रिय तक मुझको, तत्काल
सखि, तुम दोनों चली गईं हो दूर।"[23]

- - - -

"कहती है क्या सजनी?
होश संभाल
चाट न जाए हाय हमारे गाल
प्रभु के गले लटकते मोटे व्याल
सर्प-स्पर्श-सुख की आदत तो डाल
भुगतेंगे फिर होगा जो भी हाल।"[24]

इस तरह पार्वती की सखियाँ जया और विजया अत्यंत सरल और निष्कपट भाव से हर वक्त अपनी सखी पार्वती के साथ रहती है।

त्रिजटा :-

'भूमिजा' में सीता की सखी के रूप में त्रिजटा का उल्लेख हुआ है। त्रिजटा रावण की बहन थी। रावण की अशोकवाटिका में सीता जब बंदिनी थी तब सीता को डरा-धमकाकर रावण की सहचरी बनाने के लिए अनेक राक्षसियाँ नियुक्त की गई थीं, उनमें से एक त्रिजटा थी। त्रिजटा रामभक्त होकर एकांत में सीता को हमेशा सांत्वना देती रहती थी।

त्रिजटा ने रात्रिशेष में सीता के बारे में दुःस्वप्न देखा कि उसकी सखी बाढ़ में डूब गई है। इसलिए वह सीता का हाल पूछने तमसा तट पर पहुँच गई है। -

"आई थी मिलने सीता से आज
रात्रिशेष में देखा था दुःस्वप्न...
गई सखी वन्या-प्रवाह में डूब
जाऊँ, देखूँ, हाल करूँ मालूम
कामरूपिनी लंकापति-सन्तान
पहुँची थी त्रिजटा तमसा-तट-देश।"[25]

सखी-सहेली हमेशा अपनी सखी का हित सोचती है। वैसी ही त्रिजटा सीता की सच्ची हितचिंतक थी। वह सीता के उज्ज्वल भविष्य के बारे में सोचती है। उसे आशा है कि श्रीराम एक दिन सीता को जरूर अपनाएँगे तथा लव और कुश का अभिषेक होगा और शायद वही युवराज बनेंगे।

इस तरह त्रिजटा को सीता की सच्ची हितचिंतक के रूप में देखा जा सकता है।

कवि नागार्जुन ने अपने खंडकाव्यों में विविध संबंधों में नारी के रूपों को अभिव्यक्ति दी है। पौराणिक नारी पात्र अपने आदर्श रूप ही प्रस्तुत हुए हैं। नारी के विविध रूपों में सबसे महत्वपूर्ण और आदर्श रूप पत्नी का ही दिखाई देता है। निस्वार्थ पतिभक्ति का मार्ग उन्होंने नारी के सामने रखा है। उसके पतिव्रता रूप का चित्रण करने में उन्हें बड़ी सफलता मिली है।

उ) विविध रूपों में नारी :-

नागार्जुन ने अपने काव्यों में विविध रूपों में नारी चित्रण किया है। माता, पत्नी, प्रेयसी, सखी आदि संबंधों में नारी चित्रण के साथ ही नारी के उपेक्षित, सहनशील, आत्माभिमानी, विद्रोही आदि अनेक रूपों को अभिव्यक्ति दी है। नागार्जुन ने हमेशा नारी को आदर्श रूप में देखना चाहा है और दिखाने का प्रयत्न भी किया है।

1. उपेक्षिता :-

समाज में उपेक्षित नारी की स्थिति बड़ी करुणाजनक होती है। पुरुष प्रधान समाज की रचना होने के कारण भारतीय नारी के दांपत्य जीवन का स्थायित्व तथा अस्थायित्व आज भी पुरुष पर निर्भर है। उसने जब चाहा अपना लिया, जब चाहा छोड़ दिया। फिर भी पति द्वारा पत्नी का परित्याग अनेक कारणों से होता है।

सीता :-

वाल्मीकि रामायण की राम की पत्नी सीता साक्षात लक्ष्मी का अवतार होते हुए भी उसे उपेक्षित जीवन व्यतीत करना पड़ा।

पति के साथ अनेक वर्षों तक वनवास में रहकर आने के बाद अग्निपरीक्षा देने के बाद भी एक धोबी द्वारा सीता के चरित्र पर आक्षेप उठाने से राजा राम उसे पुनः वनवास देते हैं। वह भी ऐसी अवस्था में जब वह गर्भिणी थी। वे सीता के परित्याग का निश्चय करते हैं और लक्ष्मण को आज्ञा देते हैं - "सीता को जाकर तमसा नदी के किनारे छोड़ आओ।"[26]

लोकापवाद के कारण सीता को कई वर्षों तक उपेक्षित जीवन जीना पड़ा। महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में रहकर उसने जुड़वाँ बच्चों को जन्म दिया तथा उन्हें पाल-पोसकर बड़ा किया। उसकी कोई भूल न होते हुए भी तथा खुद उसके पति श्री रामचंद्र को कोई आपत्ति न होते हुए भी केवल प्रजा के हित में राम ने सीता का परित्याग किया। "गोस्वामी तुलसीदास की प्रारंभिक रचनाओं गीतावली, कवितावली और रामाज्ञाप्रश्न में सीता परित्याग का उल्लेख मिलता है।"[27]

अहल्या :-

अहल्या पति गौतम द्वारा उपेक्षित नारी है। देवराज इंद्र के छलावे के परिणामस्वरूप अहल्या को पति की उपेक्षा सहनी पड़ी। पति परायणा होकर भी सौंदर्य के वरदान से अभिशापित यह नारी पति-शाप के निर्मम दंड को भुगतने को विवश हो गई और बरसों तक उसे उपेक्षित जीवन व्यतीत करना पड़ा। श्रीराम के चरणस्पर्श से अहल्या उद्धार के बाद खुद अहल्या अपने जीवन की कहानी राम को बताती है। जिससे उसके उपेक्षित जीवन का अंदाजा लगाया जा सकता है। -

"पत्नी के प्रति पति का वह अन्याय
हुई अहल्या जो पाषाणप्राय।"[28]

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

डॉ. रामकुमार वर्मा के 'भो अहिल्या' में भी अहल्या के उपेक्षित जीवन का अनुमान इन काव्यपंक्तियों से लगता है। -

"इतने वर्षों की सतत प्रतीक्षा
जो आँखों में रही लीन,
वह प्रभुवर के करुणा-सागर में -
समा गयी बन मुग्ध मीन।" [29]

अहल्या ने बहुत दिनों तक उपेक्षित जीवन जिया था। आत्मा होकर भी चेतनाहीन अवस्था में उसने कई दिन गुजारे थे। कवि ने भूमिका में भी अहल्या के उपेक्षित जीवन के बारे में इंगित किया है। गौतम मुनि के आश्रम में "बाग के एक ओर बरगद का झमटगर वृक्ष था। उसी के नीचे पथराई स्थिति में अधेड़ उम्र वाला मानवी ढाँचा जाने कब से उपेक्षित पड़ा था।" [30]

इसप्रकार कवि नागार्जुन ने 'भूमिजा' में सीता और अहल्या के माध्यम से नारी के उपेक्षित जीवन को अभिव्यक्ति दी है। ये दोनों नारियाँ अपने पति द्वारा उपेक्षित हैं।

2. शोषित नारी :-

भारत में पुरुष-प्रधान संस्कृति होने के कारण पुरुष सामाजिक और नैतिक रूप में स्वयं को स्वतंत्र मानता है। नारी आज भी परंपरागत मान्यताओं को झुठलाने का साहस बहुत कम कर पाती है। बल्कि जहाँ तक हो सके वह विषम स्थितियों में भी पति का साथ देने की चेष्टा करती है। नारी को स्वतंत्र अस्तित्व, सम्मान न होने से परिवार तथा समाज द्वारा निरंतर उसका शोषण हो रहा है।

सीता :-

'भूमिजा' की सीता शोषित नारी पात्र है। सीता को अयोध्या कभी रास नहीं आई। हमेशा उसका मानसिक शोषण होता रहा। सीता के विवाह से लेकर उसके पृथ्वी में समाने तक का संपूर्ण जीवन जटिलताओं तथा विपत्तियों से भरा हुआ है।

श्रीराम सफल शासक होने के कारण उन्हें निरंतर जनता के हित की चिंता रहती थी। लोकहित के कारण ही वे सीता को पुनः वनवास देते हैं। यहाँ सीता एक भारतीय पत्नी की भाँति पति की आज्ञा स्वीकार कर लेती है। कई वर्षों तक साथ रहने पर भी लोकापवाद के कारण सीता का परित्याग एक प्रकार से उसका शोषण ही है। वाल्मीकि मुनि के आश्रम में बैठी सीता के मन में विचार आते हैं। वह राम के बारे में कहती है -

"चार दिन रहे भले हम साथ
कि तुमने थाम रखे थे हाथ
अयोनिज मैं, तुम थे अभिजात
तुम्हारा तो था कुल अवदात।" [31]

राम उच्च कुल में उत्पन्न तो सीता भूमि से निकली अयोनिजा मानी जाती है। उच्चकुल में उत्पन्न, साथ ही भारतीय पुरुष का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखाई देते हैं जो पारिवारिक निर्णय लेने में खुद

को स्वतंत्र मानता है। चाहे पति का निर्णय पत्नी का शोषण करने वाला क्यों न हो!

3. सहनशील नारी :-

सहनशीलता स्त्री का महत्वपूर्ण गुण है। हम पौराणिक काल से देखते आए हैं कि भारतीय स्त्री में सहनशीलता मुख्य रूप से पाई जाती है। पति चाहे कितना भी अन्याय, अत्याचार पत्नी पर करे पत्नी को चुपचाप सब सहन करना ही पड़ता है। आज स्त्रियाँ शिक्षा के कारण सबला हो रही है फिर भी अनेक प्रकार से पुरुषों के अत्याचारों को उसे सहना पड़ता है। जन्मगत संस्कार, सामाजिक बंधनों के कारण सहसा वह विरोध करने के बजाय विषम परिस्थितियों से समझौता करती है।

सीता :-

"यदि हम अन्वेषण करेंगे, रामकथा के महासागर में अपने अस्तित्व को खोकर उसकी गहराई में उतरेंगे, निमग्न होंगे तो पाएँगे कि वह तो केवल जगज्जननी भगवती जानकी के आसुओं का महासागर है।"[32] 'भूमिजा' की सीता सहनशीलता का बेजोड़ नमूना है। वर्षों तक वनवासी पति के साथ रहने वाली, रावण के अशोक वन में बंदिनी बनकर अनेक कष्ट झेलने वाली, युगों से अश्रुस्नात सीता जब प्रतीक्षा के बाद पति-मिलन के सुखद क्षणों के पास पहुँचती हैं, तभी उसकी आकांक्षाओं पर पाला पड़ जाता है। जिस पति के लिए वह वर्षों तक अनेक यातनाएँ झेलती रही, वही पति उसकी पतिव्रतापर संदेह करे, यह दुख उसके लिए अत्यंत मर्मांतक था। फिर भी हृदय को थामकर उसने अग्निपरीक्षा दी। सीता में उच्च कोटि की सहनशीलता तो तभी देखी जाती है, जब अपने पतिव्रत का प्रमाण दे चुकने वाली निर्दोष सीता को गर्भावस्था में लोकभय के कारण मर्यादा पुरुषोत्तम राम गृह-निष्कासन का कठोरतम दंड देते हैं। इन सभी परिस्थितियों से सीता ने मानो समझौता कर लिया था। इससे अधिक सहनशीलता और क्या हो सकती है?

सीता को तमसा नदी के किनारे छोड़कर लौटने के वक्त सीता लक्ष्मण से कहती है, "श्री रामचंद्र के चरणों में मेरा सत सहस्त्र प्रणाम निवेदित करना। इस स्थिति में मैं जो वनवासिनी हो गई हूँ वह पूर्वजन्म के पापों का फल है। इसमें राजा राम का कोई दोष नहीं।"[33]

सीता को जो भी सहना पड़ता है, वह सब पूर्वजन्म के पापों का फल समझकर सीता सहती रहती है। यहाँ कवि ने सीता के माध्यम से पूर्वजन्म तथा धार्मिक विश्वासों में विश्वास रखने वाली भारतीय नारी को चित्रित किया है, जो हर विषम परिस्थिति में पूर्वजन्म के पापों का फल समझकर सहने को विवश है।

4. स्वाभिमानी नारी :-

प्राचीन काल में भारतीय स्त्रियों का विश्व चार दीवारी के अंदर ही सीमित था। आधुनिक काल तक उनमें काफी बदलाव आया। शिक्षा के बढ़ते प्रसार के कारण भारतीय नारियों में आत्मविश्वास के साथ ही आत्मनिर्भरता का विकास हुआ। आज आधुनिक युग में स्त्रियाँ आत्मसम्मान के साथ जीना पसंद करती है न कि किसी की चेली बनकर। फिर भी सीता जैसी प्राचीन नारियों में स्वाभिमान भी था।

सीता :-

नागार्जुन ने 'भूमिजा' में सीता के स्वाभिमानी चरित्र को प्रधानता दी है। 'भूमिजा' की सीता स्वाभिमानी पात्र है, जो रघुकुल के एकपक्षीय मर्यादा और न्याय के प्रति नारी-सुलभ आक्रोश व्यंग्यपूर्ण शब्दों में व्यक्त करती है। उसका स्वाभिमान बोलता है कि वह बार-बार अपनी चारित्रिक शुद्धता के पक्ष में सफाई क्यों दे? इतिहास में अपना नाम, कीर्ति, यशोगान हासिल करने के लिए राम प्रजाहितैषी भले ही बनना चाहे, उसे क्या लेना-देना? उसके साथ तो अन्याय किया गया था। इसीलिए सीता आत्मसम्मान के साथ अपने बेटों सहित महामुनि वाल्मीकि के आश्रम में रहना पसंद करती है।

सीता का स्वाभिमानी रूप तो उस वक्त दिखाई देता है जब पुत्रप्राप्ति का समाचार मिलने पर राम पत्नी सीता को लाने के लिए पहले लक्ष्मण और फिर गुरु वशिष्ठ को भेजते हैं। मगर सीता वापस आने से इन्कार कर देती है। अंत में राम को स्वयं जाना पड़ा। बालकों से राम द्वारा परिचय पूछने पर दोनों बालकों ने उत्तर दिया, "हम राजा दशरथ के पौत्र, लक्ष्मण के भतीजे और सीता के पुत्र है परंतु पिता का नाम माँ ने नहीं बताया।"[34]

इस तरह अनेक कष्ट झेलने वाली सीता ने अपना स्वाभिमान नहीं खोया है।

5. त्याग/समर्पण की मूर्ति : नारी :-

समर्पण का दूसरा नाम है नारी। विशेषतः भारतीय स्त्रियों में त्याग अथवा समर्पण की भावना अधिक होती है। भोगवृत्ति की अपेक्षा त्यागवृत्ति ही स्त्री को अधिक शोभा देती है।

कवि नागार्जुन ने नारी को हमेशा आदर्श रूप में देखा है। स्त्रियोचित अन्य गुणों में समर्पण अथवा त्याग अत्यंत महान गुण समझा जा सकता है। कवि नागार्जुन ने 'भस्मांकुर' में वसंत के मुख से नारी जाति की महानता प्रकट की है। -

"शिशु समान होती है नारी-जाति
मृदुमति, तरल स्वभाव, रूप-रस-गंध
शब्द-स्पर्श के प्रति अर्पित आप्राण!
पी जाती यह हालाहल चुपचाप
कंठ नहीं होते हैं इनके नील
खंडित होने देती अपना शील
चुकता करतीं भावुकता का मूल्य
तन-मन-धन सब-कुछ देती हैं झोंक..."[35]

सीता :-

अपने आपको धरती में समर्पित करने से ज्यादा त्याग और क्या हो सकता है? कवि नागार्जुन ने 'भूमिजा' में धरती में समर्पित सीता का वर्णन किया है। लोकापवाद के भय से तथा अपने पति के यश-कीर्ति के लिए अपना आत्मत्याग करने वाली सीता जैसी शायद ही और कोई स्त्री हो। किस

चीज का त्याग नहीं किया उसने? इसके पहले भी पतिव्रता सीता जब राज-विलास त्यागकर अपने पति के साथ चौदह वर्षों तक वनवास में भी रहती है।

6. प्रेरणा का स्रोत नारी :-

नारी हमेशा पत्नी तथा प्रेयसी के रूप में प्रेरणा रही है। पति के हर अच्छे कार्यों के पीछे पत्नी प्रेरणा देती है। इसलिए तो कहा जाता है कि हर कामयाब पुरुष के पीछे स्त्री होती है।

रति :-

कविवर नागार्जुन के 'भस्मांकुर' खंडकाव्य की नायिका रति है जो हर वक्त अपने पति कामदेव की प्रेरणा के रूप में रही है। महान तपस्वी शिव की तपस्या भंग करने का काम कामदेव को सोंपा जाता है। शिव जी के क्रोध से तो सभी परिचित हैं। इसलिए कामदेव इस कार्य में साहस नहीं जुटा पा रहा है। इस अवसर पर रति कामदेव को प्रेरणा देते हुए कहती है। -

"सन्धानो लक्ष्य!
हाँ, हाँ, बढ़िया मौका आया हाथ
मत चूको यह अवसर छोड़ो तीर..." [36]

इस तरह हमेशा पति की परछाया बनकर रहने वाली रति पति को हर कार्य में प्रेरणा देती रहती है।

7. धोखे का शिकार नारी :-

कभी-कभी सरल, संवेदनशील, भोला स्वभाव स्त्री को धोखे में डाल देता है। जाने-अनजाने में वह धोखा खा जाती है।

अहल्या :-

नागार्जुन रचित 'भूमिजा' काव्य में अहल्या एक ऐसा पात्र है जो अनजाने में इंद्र से धोखे का शिकार होती है।

देवराज इंद्र पहले से ही अहल्या के अपूर्व सौंदर्य पर आसक्त थे। प्रजापति से अहल्या की माँग की थी। प्रजापति ने ही अहल्या की निर्मिति की थी। परंतु प्रजापति ने अहल्या को इंद्र को सौंपने से इनकार किया। तभी से इंद्र के मन में अहल्या के प्रति लालसा थी। प्रजापति के दरबार में अहल्या के अनुपम सौंदर्य को देखकर मन ही मन इंद्र सोच रहे थे।

"प्रथम है - यह मेरा उपहार
मैं सुरपति हूँ, इस पर होगा मेरा ही अधिकार...
भावना मन में उठी मनभावनी,
शीघ्र मेरी हो सके उर-शायिनी।" [37]

'भूमिजा' में अहल्या रामद्वारा चेतना प्राप्त होने के पश्चात् राम को अपने पति गौतम द्वारा दिए गए शाप के बारे में बताती है। उस वक्त वह राम से कहती है -

"धर कर पति के आकृति-रूप स्वभाव
यदि आवे कोई पत्नी के पास
कहो तात, फिर इसमें किसका दोष?" [38]

इन काव्यपंक्तियों से अनुमान लगाया जा सकता है कि अहल्या धोखे का शिकार नारी पात्र है।

8. विद्रोही नारी -

नागार्जुन मूलतः विद्रोही कवि थे। उनके संपूर्ण साहित्य में विद्रोह कहीं-न-कहीं दिखाई देता है। परंपरा से अन्याय सहती आई नारी भी बदलते युगानुरूप परिस्थिति से विद्रोह करती हुई दिखाई देती है। नागार्जुन जैसे प्रगतिवादी कवि ने अन्याय सहती हुई नारी में विद्रोह की आग पैदा की, जो चिनगारी बनकर फूट पड़ी।

सीता :-

'भूमिजा' की सीता अपने पर हुए अन्याय के प्रति विद्रोही स्वर प्रकट करती है। अपनी चारित्रिक शुद्धता के पक्ष में बार-बार सफाई देना उसे अच्छा नहीं लगता। लंका विजय के उपरांत अग्निपरीक्षा देने के बाद भी लोकापवाद के कारण उसका त्याग किया जाता है। अतः उसके मन में आक्रोश पैदा होता है। उसके ऊपर हुए अन्याय के प्रति उसके मन में विद्रोह पैदा होता है। 'भूमिजा' की सीता कहती है -

"प्रमाणित क्या करना है मुझे?
पावनता अपनी? अपना शील?
प्रमाणित क्या करना है मुझे?
गुह्य शुचिता? चारित्रिक ओज?" [39]

इसमें सीता का विद्रोही स्वर स्पष्ट दिखाई देता है, जो बरसों से सहे हुए अन्याय का प्रतिफलन है।

रामद्वारा सीता परित्याग के बाद 'वाल्मीकि रामायण' की सीता लक्ष्मण से संदेश सुनाने को कहती है। वह कहती है, "हे राघव, सीता सचमुच कैसी थी, यह तू जानता ही है। तेरे विषय में उसके अंदर पराकाष्ठा का प्रेम है तथा वह सर्वदा तेरे हित के विषय में तत्पर रहती है (यह भी तू जानता ही है)।।12।। परंतु हे वीर, लोक में होने वाली अपकीर्ति से डरकर तूने मेरा त्याग किया है"।।13।। [40]

उपरोक्त पंक्तियों में से 'वीर' शब्द जो राम के लिए प्रयुकक्त किया गया है, व्यंग्यपूर्ण है। सीता का व्यंग्यपूर्ण आक्रोश दिखाई देता है।

कवि नागार्जुन ने भी सहनशील नारी का विद्रोही रूप 'भूमिजा' के माध्यम से दर्शाया है।

9. पतिव्रता नारी :-

भारतीय संस्कृति में पातिव्रत्य को नारी का सबसे महान गुण समझा जाता है। पारिवारिक कष्टों को सहते हुए अपने पारिवारिक जीवन की सात्विक मर्यादा का पालन करना सामान्यतः नारी जीवन

का आदर्श था। पतिव्रत धर्म का महत्व प्राचीन काल से माना गया है। मनु ने कहा है - "वैवाहिक विधिः स्त्रीणां संस्कारों वैदिकः स्मृतः। पतिसेवा गुरौवासो गृहस्थीऽग्निपरिक्रिया।" अर्थात विवाह स्त्रियों का एक संस्कार है। पति सेवा ही उनके लिए गुरुचरणों में निवास के समान है। सुबह-शाम रसोई बनाना ही उनका होम है।" [40]

रति :-

नागार्जुन रचित 'भस्मांकुर' की रति जो कामदेव की पत्नी है, एक पतिव्रता नारी के रूप में दृष्टिगत होती है, । वह हमेशा अपने पति की परछाई बनकर रहती है। पत्नी के रूप में वह उसे प्रेम तथा प्रेरणा देती है।

पतिव्रता स्त्री हमेशा अपने पति के हित के बारे में सोचती है। रति भी ऐसी ही पत्नी है, जो हमेशा पति का खयाल रखती है तथा उसके अनिष्ट की शंका से घबरा भी जाती है।

महाक्रोधी शिवजी की तपस्या भंग करने का महत्वपूर्ण कार्य कामदेव को सौंपा जाता है। शिवजी के क्रोधी स्वभाव से रति भी पूर्ण परिचित थी। इसीलिए उसे अपने पति कामदेव की चिंता लगी रहती थी। अपने कार्य में सफल होने के लिए रति कामदेव को प्रेरणा तो देती है परंतु कामदेव द्वारा धनुष की प्रत्यंचा तानने पर उसका मन अशुभ विचारों से भर जाता है। उसे पति के बारे में चिंता निर्माण होती है। उसकी यह अवस्था इन काव्यपंक्तियों से स्पष्ट होती है।

"रति हट गई वहाँ से काफी दूर
रही देखती लेकिन पति की ओर
थी यद्यपि अब बाहर से आश्वस्त
किंतु हृदय था संदेहों से ग्रस्त
बार-बार आते थे अशुभ विचार
फड़क-फड़क उड़ती थी दाईं आँख" [41]

रति को अपना पति कामदेव प्राणों से भी प्रिय है। तभी तो शिवजी द्वारा कामदेव को भस्म करने के पश्चात वह पति के बिना एक पल भी जीना नहीं चाहती। रति सखा वसंत से कहती है -

"देख, कर रही इन प्राणों का अंत
जन्मांतर में दूँगी उसका साथ।" [42]

एक पतिव्रता नारी ही ऐसा कह सकती है।

सीता :-

'भूमिजा' खंडकाव्य की सीता का पतिव्रत तो जगविख्यात है। साक्षात लक्ष्मी का रूप होने वाली सीता पतिव्रता स्त्रियों की पंक्तियों में उच्चतम स्थान रखती है।

सीता ऐसी पतिव्रता स्त्री के रूप में है, जो हर पल पति के साथ रहना चाहती है तथा उसके सुख-दुखों में भी साथ देती है।

अहल्या :-

गौतम मुनि की पत्नी अहल्या एक पतिव्रता नारी होकर भी उसे पति के अविश्वास का शिकार होना पड़ता है। पतिद्‌वारा दिए गए शाप से मुक्त होने के बाद वह राम से कहती है -

"सत्य-सत्य कहती हूँ, परमोदार !
साक्षी पृथ्वी, साक्षी है आकाश
हुई नहीं सम्पृक्त किसी के साथ
कभी अहल्या अपने पति को छोड़ !" [43]

इन काव्य पंक्तियों को देखकर अहल्या के पातिव्रत्य को लेकर कोई शंका उपस्थित नहीं होती। कवि नागार्जुन ने नारी को हमेशा आदर्श रूप में देखना चाहा और उसी प्रकार उन्होंने अपने काव्यों में पति को ही सर्वस्व मानने वाली स्त्रियों को प्रधानता दी।

10. क्रूर/दुष्ट स्वभाव की नारी :-

दुनिया में अच्छाई है तो अच्छाई के साथ बुराई भी होती है। उजाले के साथ-साथ अंधेरा भी होता है। इसी तरह मनुष्य में भी अच्छे गुणों के साथ बुरे गुण भी विद्‌यमान रहते हैं। दुनिया में हम सब आदर्श देखना चाहते हैं, परंतु जैसा हम चाहते हैं वैसा तो सब कुछ नहीं होता।

कवि नागार्जुन ने नारी के आदर्श रूप के साथ ही उसके दुष्ट रूप को भी अभिव्यक्त किया है। परंतु साथ ही उन्होंने यह भी दिखाया है कि दुष्ट वृत्तियों का अंत भी आखिर बुरा ही होता है।

ताड़का :-

नागार्जुन रचित 'भूमिजा' में ताड़का क्रूर स्वभाव की राक्षसी के रूप में वर्णित हुई है।

महर्षि विश्वामित्र के यज्ञ को राक्षस गण सफल नहीं होने दे रहे थे। रावण के अनुचर मारीच और सुबाहु बड़ा ही विघ्न मचा रहे थे। उनकी माँ ताड़का भी उत्पात करने में अपने लड़कों से पीछे नहीं रहती थी।

ताड़का का शरीर ताड़ जैसा लंबा था। मुँह विकराल, शक्ल-सूरत भयंकर, हाथ-पैर डरावने। अपने आस-पास के जीव-जंतुओं को कई बार उसने खा-पचा डाला था। वह किसी युग में अत्यंत सुंदरी स्त्री थी। मगर एक मुनि के शाप से राक्षसी हो गई। [44]

महर्षि विश्वामित्र यज्ञ-अनुष्ठान पूरा करने हेतु राम और लक्ष्मण को अपने साथ ले आते हैं। जंगल पार करते वक्त विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को ताड़का के बारे में बताते हैं। उन जंगलों में ताड़का का बड़ा आतंक था। उसकी नाक इतनी तेज थी कि हवा में गंध पाकर ही वह अपने शिकार को ताड़ जाती थी। दस हजार हाथी की शक्ति उसमें थी, वन पर उसका ही प्रभुत्व था। जंगल के आस-पास के ग्रामों के लोग उस रास्ते से जाने में डरते थे, क्योंकि उस दुष्टा ने आस-पास के देहात उजाड़ डाले थे। उसकी क्रूरता की परिसीमा तो इतनी थी कि बाल, वृद्‌ध, रोगी, विकलांग किसी को छोड़ती नहीं थी। महर्षि विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को उसकी क्रूरता के बारे में बताते हैं -

"बाल, वृद्ध, रोगी अथवा विकलांग
नहीं किसी को वह सकती है छोड़।
गर्भ भार से मन्थर, यद्यपि चाल,
पुलकित यद्यपि नव शिशु के प्रतिरोम,
फिर भी स्त्रियाँ न पातीं उससे त्राण!
ले लेती है सबके ही वह प्राण।
अशुचि-पूर्ति दुर्गंधि अमेद्य अवद्य
वस्तु-जात से सहसा उसकी प्रीति।
है न भक्ष्य किंवा अभक्ष्य का भेद..." [45]

ताड़का के इस वर्णन से उसके क्रूर स्वभाव का पता हमें चलता है। नागार्जुन ने ताड़का के माध्यम से नारी जाति के एक पहलू पर प्रकाश डालने की कोशिश की है। परंतु साथ ही ताड़का जैसी क्रूर स्वभाव की नारी को राम एक बाण से ही मार गिराते हैं। इससे नागार्जुन ने अच्छाई की बुराई पर, सत् की असत् पर विजय दिखाई है।

11. घृणित नारी :-

अपने प्रिय व्यक्ति का अपनी अपेक्षा के विरुद्ध वर्तन सामान्यतः नैतिकता के धरातल पर, तिरस्कार एवं घृणा उत्पन्न करता है। भारतीय स्त्रियों में हमेशा आदर्श पाया जाता है। फिर भी किसी कारणवश, गलती से वह पुरुष के घृणा का पात्र बनती है।

अहल्या :-

नागार्जुन रचित 'भूमिजा' की अहल्या एक ऐसी नारी है, जो गलतफहमी से पति की घृणा का पात्र बनती है।

मुनि पत्नी अहल्या को इंद्र धोखे से पाने की कोशिश करते हैं। धोखे का शिकार हो चुकी अहल्या को पति गौतम क्षमा करने के बजाय उल्टा उसको ही धिक्कारते हैं। उससे घृणा करने लगते हैं। पत्नी की बेवफाई से क्रोधित होकर उसकी घृणास्पद शब्दों में निंदा करते हैं -

"निर्लज्जे धिक्कार!
छोड़ मुझे रमती सुरपति के संग!!
धारण करके वह मेरा ही रूप
आता है नित, कुलटे, तेरे पास!" [46]

ऐसे कटु शब्दों में गौतम मुनि अपनी पत्नी की भर्त्सना करते हुए उसे शाप दे देते हैं। इस तरह नागार्जुन ने अहल्या के माध्यम से घृणित नारी का चित्रण किया है।

12. अंधविश्वास / रूढ़िग्रस्त नारी :-

प्राचीन भारतीय समाज में विभिन्न रूढ़ियाँ तथा अंधविश्वास प्रचलित थे। अशिक्षा तथा शिक्षा का क्रम प्रसार इसका प्रमुख कारण था। इसमें भी स्वभावतः स्त्रियाँ अधिक अंधविश्वासी हुआ करती थीं। धीरे-धीरे शिक्षा के बढ़ते प्रचार-प्रसार स्वरूप समाज में व्याप्त अंधविश्वास कम होता गया।

रति :

नागार्जुन कृत 'भस्मांकुर' की नायिका रति अंधविश्वासी नारी है। स्त्रियों की दाईं आँख फड़कना अशुभ माना जाता है। रति का पति कामदेव जब शिवजी की तपस्या भंग करने हेतु प्रत्यंचा तानता है तो रति के मन में अशुभ विचार बार-बार आते हैं। शिवजी के क्रोधिष्ट स्वभाव से परिचित होने के कारण पति के बारे में उसके मन में आशंका पैदा होती है। उसकी दाईं आँख फड़कना आगे होने वाली दुर्घटना का संकत-सा उसे मालूम होता है।

रति बाहर से आश्वस्त दिखाई देने पर भी अशुभ विचारों से उसका मन संदेहों से ग्रस्त होता है। रति की इस अवस्था का वर्णन नागार्जुन ने इसप्रकार किया है।

"थी यद्यपि अब बाहर से आश्वस्त
किंतु हृदय था संदेहों से ग्रस्त
बार-बार आते थे अशुभ विचार
फड़क-फड़क उठती थी दाईं आँख।" [47]

भारतीय स्त्रियों में और एक खासियत पाई जाती है, वे नियति पर विश्वास करती हैं। जो भी कुछ दुर्दैवी घटित होता है, वह नियति के भाग्य का विधान माना जाता है। शिवजी द्वारा कामदेव को भस्म करने पर रति को नियति के बारे में शंका उत्पन्न होती है। नियति के विरुद्ध वह आक्रोश करती है -

"हाय, हाय यह कैसा नियति विधान!" [48]

रति की तरह पार्वती भी सपनों की चर्चा अपने सखियों से करती है तथा सपनों पर विश्वास करती है।

सीता :-

भारतीय प्राचीन संस्कृति में चंद्र, सूर्य, नदी आदि को देवता माना जाता था। धरती को भी माता के रूप में पूजा जाता था। सीता के जन्म की कहानी से तो सभी परिचित है। भूमि से उत्पन्न होने के कारण ही सीता को भूमिजा कहा जाता है।

वनवासकाल में सीता वाल्मीकि के आश्रम में बैठी अपने अतीत के बारे में सोच रही थी। वह सोचती है कि वह धरती से उत्पन्न हुई है। आखिर धरती में ही अंतर्धान हो जाएगी। धरती माँ ही अपनी शीतल गोद में उसे समेट लेगी और इस बात का चंद्र, सूर्य, आकाश साक्षी होगा। साथ ही नदी की धार भी साक्षी होगी।

"साक्षी होगा यह निर्मल आकाश
साक्षी होंगे चंद्र-सूर्य-नक्षत्र
साक्षी होगी जह्नु-सुता की धार
मेरी जननी लेगी मुझे समेट
पाऊँगी मैं माँ की शीतल गोद" [49]

यहीं पर सीता ने उन सभी को साक्षी माना है जिन्हें प्राचीन भारतीय समाज में देवता माना जाता था। इससे सीता का परमात्मा में विश्वास दिखाई देता है। भारतीय समाज में स्त्रियाँ आज भी चंद्र सूर्य और धरती को देवता मानकर उसकी पूजा करती है।

त्रिजटा :-

रावण की बहन त्रिजटा, जो कि सीता की सखी है, वह हमेशा सीता के उज्ज्वल भविष्य के बारे में सोचती है। एक रात भोर के समय वह सीता के विषय में दुःखद स्वप्न देखती है कि उसकी सखी नदी में डूब गई है। माना जाता है कि भोर के वक्त देखे हुए स्वप्न सच्चे होते हैं। त्रिजटा की भी ऐसी ही धारणा थी। इसलिए वह सखी का हाल पूछने, सीता से मिलने चली आती है-

"आई थी मिलने सीता से आज
रात्रिशेष में देखा था दुःस्वप्न...
गई सखी वन्या - प्रवाह में डूब
जाऊँ, देखूँ, हाल करूँ मालूम" [50]

इस तरह कवि नागार्जुन ने रति, सीता, त्रिजटा के माध्यम से देव, धार्मिक विश्वास, नियति आदि अंधविश्वासों में विश्वास रखने वालो भारतीय स्त्रियों का चित्रण किया है। एक तरह आज मनुष्य मंगल ग्रह तक पहुँचने की कोशिश कर रहा है तो दूसरी ओर अभी भी कई लोग अंधविश्वासों को गर्त से बाहर नहीं निकल रहे हैं। इसमें भी स्त्रियों का प्रमाण अधिक है।

गौण नारी पात्रों में शिवानी, मेना, कौशल्या, सुमित्रा, धाई आदि नारी पात्र काव्य में क्रियाशील नहीं है, सिर्फ उनका उल्लेख हुआ है।

ऊ) कुल निष्कर्ष :-

भारत में विशेषतः हिंदू समाज में नारी को विशेष गौरव प्राप्त है। वैदिक काल से उसका महत्वपूर्ण स्थान हम देखते आए हैं। सामाजिक विकास का मूल स्रोत नारी है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक आते-आते उसकी स्थिति में काफी बदलाव आया। शिक्षा के प्रसार के कारण परंपरागत बंधन टूटने लगे तथा स्त्रियों में जागृति उत्पन्न हुई।

साहित्य भी नारी से अछूता नहीं रहा है। विभिन्न युगों में, विभिन्न साहित्यकारों ने अपने-अपने अलग दृष्टिकोणों से नारी चित्रण किया है। कहा जाता है साहित्य समाज का आईना होता है। यह बात सही ही है। विभिन्न कालों में समकालीन परिस्थितियों के अनुरूप नारी का चित्रण साहित्यकारों ने अपने साहित्य में किया है।

कवि नागार्जुन मूलतः प्रगतिवादी कवि थे। शोषितों के प्रति आस्था तथा शोषकों के प्रति विद्रोह उनके साहित्य में पाया जाता है। उनकी दृष्टि में नारी भी शोषित ही है। उन्होंने हमेशा नारी को आदर्श रूप में देखना चाहा। नारी का आदर्श रूप उनके मन को हमेशा भाया है। समाज में हम यह भी देखते हैं कि आदर्श, कीर्ति, नाम प्राप्ति के लिए अनेक कठिनाइयों से,

संयम से गुजरना पड़ता है। नागार्जुन ने खंडकाव्यों के स्त्री-पात्र कुछ इसी प्रकार के हैं तभी तो उच्च आदर्शता प्राप्त कर चुके हैं।

नागार्जुन के स्त्री-पात्र पौराणिक होने के कारण स्वभावतः युगानुकूल आदर्श बन गए हैं। उन्होंने नारी को विभिन्न पारिवारिक रूपों में जैसे कि पत्नी, माता, प्रेयसी, भाभी आदि रूपों में कर्तव्यदक्ष, सहनशील तथा प्रेरणा के रूप में सामने रखा है। साथ ही उसके पति द्वारा उपेक्षित तथा शोषित होकर भी पति को ही समर्पित होने वाला भारतीय संस्कार भी दिखाया है। सीता जैसी पतिव्रता नारी अनेक यातनाओं और कठिनाइयों को सहन करके भी आखिर पति के प्रति ही समर्पित है। उसके माध्यम से कवि ने आधुनिक स्त्रियों के सामने महान पतिव्रत धर्म का आदर्श रखा है।

नागार्जुन के अधिकांश नारी पात्र सहनशील हैं। नारी दया, क्षमा, त्याग की प्रतिमूर्ति है। इसका उदाहरण हम सीता और अहल्या में देख सकते हैं। जो पतिद्वारा लांछित होकर भी सहनशीलता नहीं खोने देती। नारी तथा पत्नी हमेशा पुरुष, पति की प्रेरणा के रूप में रही है, जो कामदेव की पत्नी रति के माध्यम से जाना जा सकता है।

भारतीय नारी में दया, क्षमा, सहनशीलता तथा संयम आदि आदर्श गुण होते हुए भी उसने कभी स्वाभिमान नहीं खोया। उसमें सहनशीलता अपार है परंतु एक बार उसका अंत होने पर वह विद्रोह कर देती है। वैसे भी नागार्जुन विद्रोही कवि थे, अतः नारी पात्रों में विद्रोह की झलक कहीं-न-कहीं दिखाई देती है। यह हम सीता के माध्यम से देख सकते हैं।

जैसे कि हम देखते हैं कि दुनिया में एक तरफ उजाला है तो दूसरी तरफ अंधेरा होता है। इसी तरह मनुष्य में भी अच्छे गुणों के साथ-साथ बुरे गुण भी होते हैं। नागार्जुन इन बुराई को दर्शाने में भी चूके नहीं है। ताड़का राक्षसी के द्वारा उन्होंने त्याग की प्रतिमूर्ति नारी का दूसरा रूप भी दिखाया है, जो अत्यंत क्रूर है। इसके साथ ही प्राचीन भारतीय रूढ़िग्रस्त समाज में व्याप्त अंधविश्वासों में फँसी नारी का चित्रण किया है, जो कि नारी मन की स्वाभाविकता है।

नागार्जुन ने 'भूमिजा' और 'भस्मांकुर' इन पौराणिक खंडकाव्यों में नारी के आदर्श रूप को अभिव्यक्ति देने का प्रयत्न किया है। साथ ही उसकी कमजोरियाँ तथा नारीस्वभाव का दूसरा पहलू भी दिखाने की कोशिश की है, जिसमें वे काफी सफल सिद्ध हुए हैं।

* * *

संदर्भ ग्रंथ सूची

	पृ. क्र.
1. आधुनिक हिंदी काव्य में नारी भावना, डॉ. शैलकुमारी,	1
2. आदिकालीन हिंदी साहित्य, डॉ. शंभूनाथ पांडेय,	173
3. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामकुमार वर्मा,	52
4. सिद्धसाहित्य, डॉ. धर्मवीर भारती,	249/250
5. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामकुमार वर्मा,	98

6. हिंदी साहित्य का इतिहास, आ. रामचंद्र शुक्ल, 24
7. भूमिजा, नागार्जुन, 70
8. वही, 66
9. वही, 30/31
10. वही, 59
11. वही, 46
12. भस्मांकुर, नागार्जुन, 62
13. वही, 64
14. वही, 65
15. वही, 73
16. भूमिजा, नागार्जुन, 30
17. भूमिजा, नागार्जुन, 53
18. भस्मांकुर, नागार्जुन, 44
19. वही, 43
20. वही, 52
21. वही, 56
22. वही, 75
23. वही, 44
24. वही, 45
25. भूमिजा, नागार्जुन, 74
26. वही, 30
27. उत्तरायण : रामकथा का उत्तरकांड - डॉ. रामकुमार वर्मा, राष्ट्रवाणी द्वैमासिक, 29
28. भूमिजा, नागार्जुन, 53
29. ओ अहल्या, डॉ. रामकुमार वर्मा, 108
30. भूमिजा - नागार्जुन, 20
31. वही, 62
32. साहित्य-अमृत (मासिक), प्रकाशक-श्यामसुंदर, 31
33. भूमिजा, नगार्जुन, 30
34. साहित्य-अमृत (मासिक), 31
35. भस्मांकुर, नागार्जुन, 57
36. भस्मांकुर, नागार्जुन, 64
37. ओ अहल्या - डॉ. रामकुमार वर्मा, 26, 27

38. भूमिजा, नागार्जुन, 53, 54
39. वही, 61
40. मनुस्मृति - सं. पं. हरिगोविंद शास्त्री, 9-130
41. भस्मांकुर, नागार्जुन, 65
42. वही, 77
43. भूमिजा, नागार्जुन, 53
44. भूमिजा, नागार्जुन, 15
45. वही, 46
46. वही, 54
47. भस्मांकुर, नागार्जुन, 65
48. वही, 73
49. भूमिजा, नागार्जुन, 68
50 . वही, 74

* * *